५. प्रसार माध्यम और इतिहास

५.१ प्रसार माध्यमों का परिचय
५.२ प्रसार माध्यमों का इतिहास
५.३ प्रसार माध्यमों की आवश्यकता
५.४ प्रसार माध्यमों द्वारा प्राप्त होनेवाली जानकारी का विश्लेषणात्मक आकलन
५.५ संबंधित व्यावसायिक क्षेत्र

विचार करें

मुगल शासनकाल में बिहार में अकाल पड़ने पर अकाल का समाचार दिल्ली में किस प्रकार पहुँचता होगा ? फिर उस समाचार पर विचार-विमर्श होकर दिल्ली मुगल शासक जो उपाय योजना करते होंगे; वह उपाय योजना बिहार में पहुँचने के लिए कितना समय लगता होगा ?

५.१ प्रसार माध्यमों का परिचय

'प्रसार माध्यम' शब्द 'प्रसार' और 'माध्यम' इन दो शब्दों से बना है । प्रसार का अर्थ दूर तक पहुँचना होता है । हम किसी जानकारी को किसी माध्यम की सहायता से दूर तक पहुँचा सकते हैं । पहले किसी राजा को यदि कोई समाचार पूरे राज्य को देना हो तो उसके लिए कई दिन लग जाते थे। पहले गाँव-गाँव में मुनादी की जाती थी । एक-से -दूसरे आदमी तक, दूसरे-से-तीसरे आदमी तक; इस प्रकार समाचार की यात्रा चलती थी ।

५.२ प्रसार माध्यमों का इतिहास

भारत में अंग्रेजों के आने के पश्चात मुद्रणकला और समाचारपत्रों का प्रारंभ हुआ । समाचारपत्रों के कारण छपे समाचार सर्वत्र पहुँचने में सहायता प्राप्त होने लगी । समाचारपत्र सूचना और ज्ञान प्रसार का साधन बना ।

समाचारपत्र : 'समाचारपत्र' उस प्रकाशन को कहते हैं, जिसमें मुख्य रूप से समाचार, संपादकीय लेख, लोगों के विचार, विज्ञापन, मनोरंजक और अन्य पूरक पठनीय सामग्री का समावेश रहता है तथा जो नियत समय पर और नियमित रूप से छपकर वितरित किया जाता है ।

समाचारपत्र स्थानीय, देशांतर्गत तथा विश्व स्तर के विभिन्न समाचार पहुँचाने का कार्य करते हैं । वर्तमान घटित घटनाओं को अंकित करने वाला समाचारपत्र अर्थात एक ऐतिहासिक दस्तावेज ही है ।

समाचारपत्रों का पूर्वरूप : इजिप्त में ईसा पूर्व कालखंड में सरकारी आदेशों के उकेरे हुए शिलालेख सार्वजनिक स्थानों पर लगा रखते थे । प्राचीन रोमन साम्राज्य में सरकारी आदेश कागज पर लिखकर वे कागज अलग-अलग प्रांतों में वितरित किए जाते थे । इसमें देश और राजधानी में घटित घटनाओं की जानकारी का समावेश रहता था । जूलियस सीजर के आधिपत्य में 'एक्टा डाइर्ना' (डेली एक्ट-प्रतिदिन की घटनाएँ) नामक समाचारपत्र रोम में सार्वजनिक स्थानों पर लगाए जाते थे । सरकारी निवेदनों/ज्ञापनों को लोगों तक पहुँचाने का वह एक प्रभावी माध्यम था । सातवीं शताब्दी में चीन में सरकारी निवेदनों/ज्ञापनों को सार्वजनिक स्थानों पर बाँटा जाता था । इंग्लैंड में युद्धों अथवा महत्वपूर्ण घटनाओं के पर्चे बीच-बीच में वितरित किए जाते थे । धर्मशालाओं-सरायों में रुकने वाले यात्री और घुमक्कड़ वहाँ के स्थानीय लोगों को दूर के समाचार चटपटे बनाकर बताया करते थे। राजाओं के प्रतिनिधि विभिन्न स्थानों पर हुआ करते थे । वे ताजा समाचार राजदरबार में भेजा करते थे ।

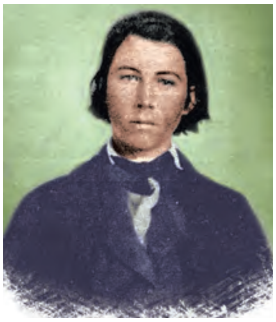

जेम्स ऑगस्टस हिकी

बेंगॉल गजट : भारत में पहला अंग्रेजी समाचारपत्र २९ जनवरी १७८० ई. को प्रारंभ हुआ । 'कोलकाता

जनरल एडवरटाइजर' अथवा 'बेंगॉल गजट' के नाम से वह जाना जाता था । इसे आइरिश व्यक्ति जेम्स ऑगस्ट हिकी ने शुरू किया ।

दर्पण : 'दर्पण' समाचारपत्र १८३२ ई. में मुंबई में प्रारंभ हुआ । बालशास्त्री जांभेकर 'दर्पण' के संपादक थे ।

सूची बनाइए

स्वतंत्रतापूर्व समय में कुछ प्रमुख नेताओं तथा उनके द्‍वारा प्रारंभ किए गए समाचारपत्रों की सूची बनाइए ।

बालशास्त्री जांभेकर

'दर्पण' के संस्करण में अंकित समाचारों द्‍वारा हमें राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक इतिहास प्राप्त होता है । जैसे - (१) कंपनी सरकार के तीन इलाकों की आय-व्यय की सूची । (२) इस देश पर रूसियों का आक्रमण होने की आशंका (३) शहर स्वच्छ रखने के लिए समिति की स्थापना । (४) हिंदू विधवाओं का पुनर्विवाह । (५) कोलकाता में थिएटर की शुरूआत । (६) राजा राममोहन रॉय का इंग्लैंड में कार्य । इसके आधार पर तत्कालीन परिस्थिति पर प्रकाश पड़ता है ।

क्या, आप जानते हैं ?

प्रथम मराठी समाचारपत्र 'दर्पण' के संपादक के नाते बालशास्त्री जांभेकर को आदि अथवा आद्‍य संपादक कहा जाता है । ६ जनवरी को उनका जन्मदिन होता है । अतः उनके जन्मदिन को 'पत्रकार दिवस' के रूप में महाराष्ट्र में मनाया जाता है ।

प्रभाकर : इस समाचारपत्र को भाऊ महाजन ने प्रारंभ किया । उसमें फ्रांस की राज्यक्रांति का इतिहास (फ्रांस की राज्यक्रांति), लोकहितवादी (गोपाल हरि देशमुख) के सामाजिक पुनर्जागरण पर लिखे हुए 'शतपत्रे' (सौ पत्र) प्रकाशित हुए ।

ज्ञानोदय : 'ज्ञानोदय' समाचारपत्र में १८४२ ई. में एशिया महाद्‍वीप का और १८५१ ई. में 'यूरोप का मानचित्र' छापे गए । मराठी समाचारपत्र में प्रथम चित्र छापने का सम्मान ज्ञानोदय को प्राप्त है । बिजली की सहायता से समाचार पहुँचाने का यंत्र अर्थात टेलीग्राफ का प्रारंभ १८५२ ई. में हुआ; यह जानकारी ज्ञानोदय द्‍वारा प्राप्त होती है । भारत में पहली रेल चली; यह समाचार ज्ञानोदय में 'चाक्या म्हसोबा' शीर्षक से छपा था । इसी समाचारपत्र में १८५७ के राष्ट्रीय विद्रोह के समाचार छपे थे ।

समाचारपत्र सामाजिक पुनर्जागरण का कार्य करने वाला महत्वपूर्ण माध्यम था । जैसे 'इंदुप्रकाश' समाचारपत्र ने विधवा विवाह का जोरदार समर्थन किया। बहुजन समाज का मुखपत्र 'दीनबंधु' कृष्णराव भालेकर जो महात्मा जोतीराव फुले के सहकारी थे; उन्होंने प्रारंभ किया । इस समाचारपत्र द्‍वारा हमें बहुजन समाज की समकालीन परिस्थिति का बोध होता है ।

करके देखें-

कक्षा का प्रत्येक विद्‍यार्थी किसी एक समाचार की कतरन लाकर उसकी कॉपी बनाएगा ।

केसरी और मराठा : स्वतंत्रतापूर्व समय के भारतीय समाचारपत्रों के इतिहास में महत्वपूर्ण चरण के रूप में 'केसरी' और 'मराठा' समाचारपत्रों का उल्लेख किया जाता है । ये समाचारपत्र १८८१ ई. में गोपाल गणेश आगरकर और बाल गंगाधर तिलक ने प्रारंभ किए । इन समाचारपत्रों द्‍वारा तत्कालीन सामाजिक और राजनीतिक समस्याओं को वाणी प्रदान की गई । 'देश की दशा, देशभाषा में लिखे गए ग्रंथ और विलायत की राजनीति' इन विषयों के आनुषंगिक रूप से केसरी ने लिखना प्रारंभ किया ।

इक्कीसवीं शताब्दी में समाचारपत्र लोकतंत्र के चौथे स्तंभ के रूप में भूमिका निभा रहे हैं ।

पत्र-पत्रिकाएँ : निश्चित समयावधि में प्रकाशित

होनेवाले मुद्रित साहित्य को पत्रिका कहते हैं । इसमें साप्ताहिक, पाक्षिक, मासिक, द्‌वैमासिक, त्रैमासिक, षण्मासिक, वार्षिक पत्रिका का समावेश होता है । इसके अतिरिक्त एक और प्रकार है; वह है अनियतकालिक पत्रिका । अनियतकालिक पत्रिकाओं के प्रकाशन का निश्चित समय नहीं होता है ।

करके देखें–

आधुनिक समय में अनेक समाचारपत्रों ने तकनीकी विज्ञान का उपयोग कर अपने ई–संस्करण प्रारंभ किए हैं । ये ई–संस्करण पाठकों द्‌वारा बड़ी मात्रा में पढ़े जाते हैं ।

शिक्षकों की सहायता से ई–समाचारपत्र किस प्रकार पढ़ने चाहिए; इसे समझ लीजिए ।

बालशास्त्री जांभेकर ने मराठी भाषा में प्रथम मासिक पत्रिका 'दिग्दर्शन' शुरू की । यदि पत्र–पत्रिकाओं का विचार करें तो 'प्रगति' (१९२९ ई.) साप्ताहिक पत्रिका महत्वपूर्ण मानी जाती है । उसके संपादक त्र्यंबक शंकर शेजवलकर थे । उन्होंने 'प्रगति' में इतिहासशास्त्र, महाराष्ट्र का इतिहास और सामाजिक आंदोलन आदि विषयों पर विपुल लेखन कार्य किया ।

वर्तमान समय में भारतीय इतिहास से संबंधित अनेक पत्र–पत्रिकाएँ प्रकाशित हो रही हैं । जैसे–मराठी भाषा में 'भारतीय इतिहास आणि संस्कृति', 'मराठवाड़ा इतिहास परिषद पत्रिका' आदि ।

चलिए... खोजेंगे

ऊपरी उदाहरणों के अतिरिक्त महाराष्ट्र और केंद्र स्तर पर इतिहास के अनुसंधान/शोधकार्य से संबंधित संस्थान और विश्वविद्‌यालय मराठी, हिंदी और अंग्रेजी भाषाओं में पत्र–पत्रिकाएँ प्रकाशित करते हैं । अंतरजाल की सहायता से उनकी खोज कीजिए ।

वेब पत्रकारिता : अत्याधुनिक पत्र–पत्रिकाओं में 'वेब पत्रकारिता' वर्ग में प्रकाशित होने वाली पत्र–पत्रिकाओं का समावेश होता है । इसमें भी मुख्य विषय के रूप में 'इतिहास' ही होता है । वेब न्यूज पोर्टल्स, सोशल मीडिया, वेब चैनल्स, यू ट्यूब पर अंग्रेजी और भारतीय भाषाओं में पाठकों और दर्शकों के लिए पठनीय सामग्री उपलब्ध कराई जाती है ।

आकाशवाणी : स्वतंत्रतापूर्व समय में १९२४ ई. में 'इंडियन ब्रॉडकास्टिंग कंपनी' (आईबीसी) नाम से प्रतिदिन कार्यक्रमों का प्रसारण करने वाला एक निजी रेडियो केंद्र प्रारंभ हुआ । बाद में अंग्रेज सरकार ने इस कंपनी का 'इंडियन स्टेट ब्रॉडकास्टिंग कंपनी' (आईएसबीएस) नामकरण किया । ८ जून १९३६ ई. को इस कंपनी का नामकरण 'ऑल इंडिया रेडियो' (एआईआर) हुआ ।

भारत स्वतंत्र होने के पश्चात AIR भारत सरकार के सूचना एवं प्रसारण विभाग का एक अंग बना । इसका प्रारंभिक स्वरूप सरकारी कार्यक्रमों और उपक्रमों की जानकारी देने वाला अधिकृत केंद्र था। विख्यात कवि पंडित नरेंद्र शर्मा के सुझाव पर इसे 'आकाशवाणी' नाम दिया गया । आकाशवाणी द्‌वारा विविध मनोरंजनपर कार्यक्रम प्रस्तुत किए जाते हैं । इसी तरह; किसान, मजदूर, युवा वर्ग और महिलाओं के लिए विशेष कार्यक्रम प्रसारित किए जाते हैं । लोकप्रिय रेडियो सेवा 'विविधभारती' द्‌वारा २४ भाषाओं और १४६ बोली भाषाओं में कार्यक्रम प्रारंभ हुए हैं । वर्तमान समय में निजी रेडियो सेवाएँ शुरू हुई हैं । जैसे–रेडियो मिरची ।

क्या, आप जानते हैं ?

भारत में पहला 'न्यूज बुलेटिन' २३ जुलाई १९२७ ई. को मुंबई रेडियो केंद्र से प्रसारित किया गया । इसके बाद कोलकाता से बांग्ला भाषा में समाचारों का प्रसारण प्रारंभ हुआ ।

दूरदर्शन : १५ सितंबर १९५९ ई. को भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ.राजेंद्रप्रसाद ने 'दिल्ली दूरदर्शन केंद्र' का उद्घाटन किया । महाराष्ट्र में १ मई १९७२ ई. को मुंबई केंद्र के कार्यक्रम प्रारंभ हुए । १५ अगस्त १९८२ ई. को रंगीन दूरदर्शन का आगमन हुआ । १९९१ ई. में विदेशी और देशी निजी चैनलों को केबल तकनीक का उपयोग कर कार्यक्रम प्रसारित करने की अनुमति प्रदान की गई । आज भारतीय दर्शकों के लिए सौ से अधिक चैनल उपलब्ध हैं ।

५.३ प्रसार माध्यमों की आवश्यकता

किसी भी जानकारी को मुक्त रूप में समाज में फैलाने अथवा प्रसारित करने हेतु प्रसार माध्यमों की आवश्यकता होती है । संपादकीय लेख, विविध स्तंभ, संस्करण समाचारपत्र के अभिन्न अंग होते हैं । पाठकों के पत्र स्तंभ द्वारा पाठक भी अपने विचार व्यक्त करते रहते हैं । समाचारपत्र लोकतंत्र को अधिकाधिक सशक्त बनाने में सहयोग दे सकते हैं ।

दूरदर्शन दृश्य-श्रव्य माध्यम है । अतः उसने समाचारपत्र और आकाशवाणी की सीमाओं को लाँघकर जनता को 'सचमुच क्या हुआ है ?' यह दिखाना प्रारंभ किया । जनता के लिए किसी घटना का 'आँखों देखा हाल' जानने-देखने के लिए दूरदर्शन का अन्य कोई विकल्प नहीं है ।

करके देखें-

वर्तमान समय में विविध दूरदर्शन (टी.वी.) के चैनलों की जानकारी अपने मित्रों के समूह में समूहकार्य के रूप में लिखिए ।

५.४ प्रसार माध्यमों द्वारा प्राप्त होने वाली जानकारी का विश्लेषणात्मक आकलन

प्रसार माध्यमों द्वारा प्राप्त होने वाली जानकारी का विश्लेषणात्मक आकलन कर लेना होता है । हर बार समाचारपत्र द्वारा हम तक पहुँचने वाली जानकारी वास्तविकता अथवा सच्चाई के आधार पर होगी ही; यह आवश्यक नहीं है । हमें उसकी जाँच-पड़ताल करनी पड़ती है । अनधिकृत समाचार प्रकाशित होने का एक विश्वविख्यात उदाहरण है । 'स्टर्न' नाम के एक जर्मन साप्ताहिक पत्रिका ने एडॉल्फ हिटलर की लिखावट में लिखी अनेक दैनंदिनियाँ खरीदीं और उन्हें अन्य प्रकाशन कंपनियों को बेचा । हिटलर की तथाकथित हस्तलिखित दैनंदिनी बरामद होने का समाचार प्रकाशित हुआ परंतु कालांतर में यह सिद्ध हुआ कि वे दैनंदिनियाँ जाली थीं । अतः प्रसार माध्यमों द्वारा प्राप्त होने वाली जानकारी का उपयोग करते समय सावधानी रखनी पड़ती है ।

५.५ संबंधित व्यावसायिक क्षेत्र

समाचारपत्रों को प्रतिदिन के ताजा समाचार पाठकों तक पहुँचाने होते हैं । यह कार्य करते समय 'समाचार के पीछे के समाचार' बताने पड़ते हैं । किसी समाचार की विस्तार में समीक्षा करते समय यदि विगत समय में इसी प्रकार की कोई घटना अन्यत्र घटी थी तो समाचारपत्र उसे समाचार के बीच में चौखट में छापते हैं । परिणामस्वरूप पाठकों को अतिरिक्त जानकारी प्राप्त होती है और उस घटना की जड़ तक पहुँचना आसान हो जाता है ।

समाचारपत्रों के अलग-अलग स्तंभों में पचास वर्ष पूर्व, सौ वर्ष पूर्व जैसे स्तंभ होते हैं । वे इतिहास के साधन होते हैं और इतिहास पर आधारित होते हैं । ऐसे स्तंभों द्वारा हमें भूतकाल में घटित आर्थिक सामाजिक, राजनीतिक, ऐतिहासिक घटनाओं का बोध होता है । भूतकाल की पृष्ठभूमि में वर्तमान समय को समझने में सहायता प्राप्त होती है ।

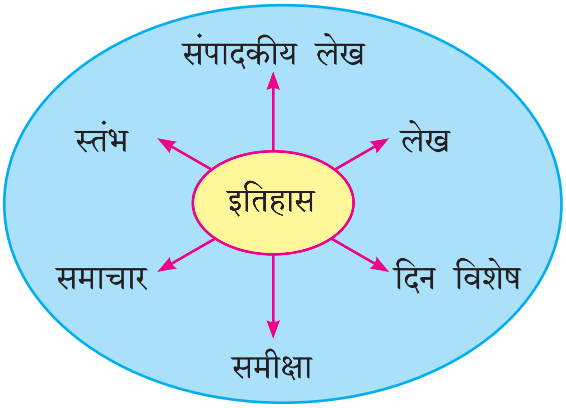

समाचारपत्रों को विशेष अवसरों पर संस्करण अथवा विशेषांक निकालने पड़ते हैं । जैसे-१९१४ ई. में प्रथम विश्वयुद्ध प्रारंभ हुआ । इस घटना को २०१४ ई. में १०० वर्ष पूरे हुए । इस युद्ध की समग्र समीक्षा करने वाला संस्करण निकालते समय उस घटना का इतिहास ज्ञात होना आवश्यक होता है । १९४२ ई. के 'भारत छोड़ो' आंदोलन को २०१७ ई. में ७५ वर्ष पूर्ण हुए । ऐसे अवसरों पर समाचारपत्र लेख, संपादकीय लेख, दिनविशेष, समीक्षा द्वारा उस घटना को दोहराया जाता है । ऐसे समय इतिहास का अध्ययन उपयोगी सिद्ध होता है ।

करके देखें-

वर्ग पहेली के लिए भी समाचारपत्र इतिहास की सहायता लेते हैं । आप भी अलग-अलग प्रकार की वर्ग पहेलियाँ तैयार कर सकते हैं । जैसे-किलों और गढ़ों के नाम ।

आकाशवाणी के लिए भी इतिहास महत्त्वपूर्ण विषय है । जैसे - १५ अगस्त १९४७ अथवा उसके पश्चात स्वतंत्रता दिवस पर प्रधानमंत्री द्वारा किए गए भाषण आकाशवाणी के संग्रह में हैं और समकालीन स्थिति को समझने के लिए उन भाषणों का उपयोग होता है ।

समझ लें

१९४२ ई. के आंदोलन में भूमिगत रेडियो केंद्रों ने जो महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई; उसकी जानकारी शिक्षकों की सहायता से प्राप्त कीजिए ।

कुछ विशेष अवसरों पर आकाशवाणी को इतिहास के अध्येताओं की आवश्यकता अनुभव होती है । राष्ट्रीय नेताओं का जन्मदिन अथवा पुण्यतिथि, किसी ऐतिहासिक घटना को १ वर्ष, २५ वर्ष, ५० वर्ष, १०० वर्ष पूर्ण होने पर अथवा इसी क्रम में अधिक वर्ष पूर्ण होने पर उसकी चर्चा करने के लिए उस घटना की जानकारी की आवश्यकता होती है । राष्ट्रीय नेताओं के कार्यों पर वक्तव्य देने के लिए वक्ताओं को इतिहास की सहायता लेनी पड़ती है । आकाशवाणी पर भी दिन विशेष कार्यक्रम प्रसारित होते हैं ।

दूरदर्शन और इतिहास का घनिष्ठ संबंध है । इतिहास के प्रति रुचि और जागरूकता निर्माण करने का महत्त्वपूर्ण कार्य दूरदर्शन और अन्य चैनल करते हैं । दूरदर्शन द्वारा प्रसारित रामायण, महाभारत जैसे पौराणिक धारावाहिकों तथा भारत-एक खोज, राजा शिवछत्रपति जैसे ऐतिहासिक धारावाहिकों ने बहुत बड़े दर्शक वर्ग को अपनी ओर आकर्षित किया । रामायण-महाभारत जैसे धारावाहिकों का निर्माण करते समय तत्कालीन वातावरण, वेशभूषा, शस्त्र-अस्त्र, रहन-सहन, भाषा के विषय में तज्ञों की आवश्यकता होती है । इसके लिए इतिहास का सूक्ष्मता से अध्ययन करना पड़ता है ।

आधुनिक समय में डिस्कवरी, नैशनल जियोग्राफी, हिस्ट्री जैसे चैनलों पर प्रसारित होने वाले धारावाहिकों द्वारा विश्व भर के इतिहास का कोष दर्शकों के लिए खोल दिया गया है । उसके द्वारा लोग विश्व के इतिहास और भूगोल को घर बैठे समझ सकते हैं । इन धारावाहिकों को अधिक रोचक बनाने के लिए कई बार इतिहास के चुनिंदा प्रसंगों को चरित्रों के माध्यम से प्रस्तुत किया जाता है । जैसे-पराक्रमी स्त्री-पुरुष, खिलाड़ी, सेनानी आदि । इसके अतिरिक्त वास्तु, किलों-गढ़ों, साम्राज्यों का उदय और अस्त । यही नहीं अपितु लोग पाककला के इतिहास पर आधारित धारावाहिक भी बड़े कौतूहल से देखते हैं ।

उपर्युक्त सभी क्षेत्रों के लिए इतिहास के गहन अध्ययन की आवश्यकता होती है ।

समझ लें

भारत के प्राचीन इतिहास से लेकर आधुनिक इतिहास के संदर्भ में दूरदर्शन द्वारा प्रसारित 'भारत – एक खोज' धारावाहिक महत्वपूर्ण है । यह धारावाहिक पंडित नेहरू की 'डिस्कवरी ऑफ इंडिया' पुस्तक पर आधारित था । श्याम बेनेगल ने इसका निर्देशन किया था । इस धारावाहिक द्वारा भारत के प्राचीन कालखंड से लेकर आधुनिक कालखंड का सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक इतिहास प्रस्तुत किया गया । यह धारावाहिक सूक्ष्म अनुसंधान और प्रस्तुति के स्तर पर रोचक सिद्ध हुआ ।

इस धारावाहिक द्वारा हड़प्पा संस्कृति, वैदिक कालखंड, रामायण–महाभारत का अन्वयार्थ, मौर्य कालखंड, तुर्कियों–अफगानियों और मुगलों के आक्रमण, मुगलों का कालखंड और मुगल शासकों का योगदान, भक्ति आंदोलन, छत्रपति शिवाजी महाराज का कार्य, समाजसुधार के आंदोलन और स्वतंत्रता संग्राम जैसी अनेक घटनाओं को प्रस्तुत किया गया ।

इस धारावाहिक में नाट्य, लोककला, जागरणपर जानकारी की सहायता से नेहरू के रूप में कलाकार रोशन सेठ प्रस्तावना करते और अन्वयार्थ बताते । इतिहास की ओर पंडित नेहरू का देखने का दृष्टिकोण और उसकी प्रभावशाली प्रस्तुति के फलस्वरूप यह धारावाहिक संपूर्ण भारत में प्रशंसा का पात्र बना ।

स्वाध्याय

१. (अ) दिए गए विकल्पों में से उचित विकल्प चुनकर कथन पूर्ण कीजिए ।

(१) भारत में पहला अंग्रेजी समाचारपत्र .... ने प्रारंभ किया ।
(अ) जेम्स ऑगस्टस हिकी (ब) सर जॉन मार्शल
(क) एलन ह्यूम (ड) बाळशास्त्री जांभेकर

(२) दूरदर्शन .... माध्यम है ।
(अ) दृश्य (ब) श्रव्य
(क) दृश्य–श्रव्य (ड) स्पर्शात्मक

(ब) निम्न में से असत्य जोड़ी को पहचानकर लिखिए ।

(१) प्रभाकर – आचार्य प्र.के.अत्रे
(२) दर्पण – बालशास्त्री जांभेकर
(३) दीनबंधु – कृष्णराव भालेकर
(४) केसरी – बाल गंगाधर तिलक

२. टिप्पणी लिखिए ।

(१) स्वतंत्रता संग्राम में समाचारपत्रों का योगदान
(२) प्रसार माध्यमों की आवश्यकता
(३) प्रसार माध्यमों से संबंधित व्यावसायिक क्षेत्र

३. निम्न कथन कारणसहित स्पष्ट कीजिए ।

(१) प्रसार माध्यमों द्वारा प्राप्त होने वाली जानकारी का विश्लेषणात्मक आकलन करना पड़ता है ।
(२) समाचारपत्रों को इतिहास विषय की आवश्यकता अनुभव होती है ।
(३) सभी प्रसार माध्यमों में दूरदर्शन अत्यंत लोकप्रिय माध्यम है ।

४. निम्न अनुच्छेद को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए ।

आकाशवाणी : स्वतंत्रतापूर्व समय में १९२४ ई. में 'इंडियन ब्रॉडकास्टिंग कंपनी' (आईबीसी) नाम से प्रतिदिन कार्यक्रमों का प्रसारण करने वाला एक निजी रेडियो केंद्र प्रारंभ हुआ । बाद में अंग्रेज सरकार ने इस कंपनी का 'इंडियन स्टेट ब्रॉडकास्टिंग सर्विसेस' (आईएसबीएस) नामकरण किया । ८ जून १९३६ ई. को इस कंपनी का नामकरण 'ऑल इंडिया रेडिओ' (एआईआर) हुआ ।

भारत स्वतंत्र होने के पश्चात AIR भारत सरकार के सूचना एवं प्रसारण विभाग का एक अंग बना । इसका प्रारंभिक स्वरूप सरकारी कार्यक्रमों और उपक्रमों की जानकारी देने वाला अधिकृत केंद्र था। विख्यात कवि पंडित

नरेंद्र शर्मा के सुझाव पर इसे 'आकाशवाणी' नाम दिया गया । आकाशवाणी द्‌वारा विविध मनोरंजनपर कार्यक्रम प्रस्तुत किए जाते हैं । इसी तरह; किसान, मजदूर, युवा वर्ग और महिलाओं के लिए विशेष कार्यक्रम प्रसारित किए जाते हैं । लोकप्रिय रेडियो सेवा 'विविधभारती' द्‌वारा २४ भाषाओं और १४६ बोली भाषाओं में कार्यक्रम प्रारंभ हुए हैं । वर्तमान समय में निजी रेडियो सेवाएँ शुरू हुई हैं । जैसे-रेडियो मिरची ।

(१) आकाशवाणी का समावेश किस विभाग के अंतर्गत होता है ?

(२) IBC का बाद में नामकरण क्या हुआ ?

(३) विविधभारती द्‌वारा कितनी भाषाओं और बोली भाषाओं में कार्यक्रम प्रस्तुत होते हैं ?

(४) आकाशवाणी नाम कैसे मिला ?

५. संकल्पनाचित्र बनाइए ।

	समाचारपत्र	आकाशवाणी	दूरदर्शन
प्रारंभ/ पृष्ठभूमि			
जानकारी का/ कार्यक्रमों का स्वरूप			
कार्य			

उपक्रम

तुमने देखे हुए किसी ऐतिहासिक धारावाहिक का समीक्षण कीजिए ।

36SVCE